निस्केयर
NISCAIR

विज्ञान प्रगति

जून 2016

प्रमुख सम्पादक
दीक्षा बिष्ट

सम्पादक
बालक राम

प्रोडक्शन अधिकारी
पंकज गुप्ता
एस. पी. सिंह

कला अधिकारी
नीरू विजन

कम्पोज़िंग
मीरा देवी

वरिष्ठ बिक्री एवं वितरण अधिकारी
लोकेश कुमार चोपड़ा

आवरण
नीरू विजन

क्या आप जानते हैं कि शहरी क्षेत्रों में रहने वाले 80 प्रतिशत लोग जहरीली हवा में सांस ले रहे हैं? ये बात उजागर हुई है विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट से, जिसमें बताया गया है कि वर्ष 2008 से 2013 के दौरान 795 शहरों में प्रदूषण का अध्ययन किया गया। इस रिपोर्ट में प्रदूषण करने वाले साधनों के बारे में जानकारी देते हुए बताया गया है कि भारत में प्रदूषण फैलाने वाले ईंधनों का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाता है। शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को इस बात का अनुमान भी नहीं होगा कि आज भी 40 करोड़ घरों में रोशनी बिजली के बल्ब से नहीं बल्कि मिट्टी के तेल यानी कैरोसिन से जलने वाले लैम्पों के कारण होती है और अगर कैरोसिन तेल मिलावटी हो तो लैम्प से निकलता जहरीला धुआं साफ देखा जा सकता है।

अप्रैल 2015 तक किये गये सर्वेक्षण से पता चलता है कि एक अरब से भी ज्यादा आबादी वाले हमारे देश भारत में केवल 16.3 करोड़ लिक्विड पेट्रोलियम गैस (एल पी जी) उपभोक्ता हैं। इसका मतलब देश की एक बहुत बड़ी आबादी आज भी लकड़ी, कोयले और मिट्टी के तेल से जलने वाले स्टोव आदि पर निर्भर करती है। देश में 29.4 प्रतिशत ऊर्जा उत्पादन तेल से हो रहा है तो 54 प्रतिशत कोयले से।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विकास के फलस्वरूप यद्यपि हमने बड़े साधन जुटा लिये हैं परन्तु प्रदूषण का स्तर है कि कम ही नहीं हो रहा है, बढ़ता जा रहा है। पिछले 5 वर्षों में वायु प्रदूषण में पांच गुना बढ़ोतरी हुई है। विश्व के एक लाख से अधिक की आबादी वाले क्षेत्रों का तो प्रदूषण से बुरा हाल है। पिछले लगभग 40 सालों से हम पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम के बारे में बात करते आ रहे हैं। प्राकृतिक आपदायें चेतावनी देती हुई आती हैं और वृहत स्तर पर जान-माल का नुकसान कर देती हैं। थोड़ा सा हाहाकर मचाने के बाद फिर हम अपने कार्यों में व्यस्त हो जाते हैं।

ये बात नहीं कि सरकारें प्रदूषण रोकथाम के लिये कुछ नहीं करतीं, खूब करती हैं। हर साल सरकारी गैर-सरकारी स्तर पर पेड़ लगाये जाते हैं। वनों की सुरक्षा के लिये प्रबन्धन किया जाता है, वायु प्रदूषण, शोर प्रदूषण, जल प्रदूषण हर बात के लिये नियम तय किये जाते हैं..... परन्तु क्या हम आप इन पर अमल करते हैं? अरबों की आबादी में शायद ही कुछ लोग ऐसे होंगे जो इन कार्यों के लिये समर्पित होंगे क्योंकि वायु प्रदूषण की रोकथाम की अपील के चलते भी दीवाली पर जहरीली आतिशबाजी से जो धुआं हम अपने पर्यावरण में छोड़ते जाते हैं, क्या वो आपको स्वच्छ हवा में सांस लेने देगा? बूढ़े, बच्चे, दमा और हृदय रोगियों को इनसे कितनी तकलीफ होगी हम ये कभी नहीं सोचते। जोर-जोर से लाउडस्पीकर में गाने बजाना, शोर प्रदूषण को निमंत्रण देता है। फर्राटे से चलने वाले धुआं उगलते वाहन क्या उत्तरदाई नहीं हैं, प्रदूषण बढ़ाने के लिये? फिर भी हम इसके भयावह नतीजों को जानने के बाद भी अपने पर्यावरण को अपने स्वास्थ्य के अनुकूल बनाने को तैयार नहीं होते और खुश हो जाते हैं ये खबर सुनकर कि भारत की राजधानी दिल्ली विश्व के 10 शीर्ष प्रदूषित शहरों में नहीं है क्योंकि उसका स्थान अब 11वें नम्बर पर है।

पता नहीं हम कब जागरुक होंगे, कब हममें चेतना आयेगी और हम फिर से कब दोहरायेंगे ये पंक्तियां **'हरी भरी वसुन्धरा पे नीला नीला ये गगन..... ये कौन चित्रकार है ये कौन चित्रकार।'**

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर प्रस्तुत है विज्ञान प्रगति का **'पर्यावरण विशेषांक'**। यह अंक आपको कैसा लगा प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

समाज की सेवा में सीएसआईआर के योगदान पर एक स्तम्भ जून माह से आरंभ किया जा रहा है ताकि आम जनता के लिये उपयोगी सीएसआईआर के उत्पादों की जानकारी आप तक पहुंच सके और आम जन उनका लाभ उठा सकें।

मूल्य

एक अंक	:	30.00 रुपये
एक वर्ष	:	300.00 रुपये
दो वर्ष	:	570.00 रुपये
तीन वर्ष	:	810.00 रुपये
विदेशी वार्षिक सदस्यता	:	65$
शिकायत	:	011-25841647
ई-मेल	:	lkc@niscair.res.in

सम्पादकीय	: 011-25841769, 011-25846301, 04-07/370
प्रोडक्शन	: 011-25847353, 25846301, 04-07/217, 337
विज्ञापन	: 011-25843359
बिक्री	: 011-25841647, 25846301, 04-07/286, 289
फैक्स	: 011-25847062
ई-मेल	: vp@niscair.res.in
वेब साइट	: http://www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान

लेखकों के कथनों ओर मतों के लिये सी.एस.आई.आर. -राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है।

पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।